

CLASS-36: Summary

1. विहायोगति नामकर्म के वर्णन में हमने जाना कि

- a. इसके माध्यम से विहायस् यानि आकाश में गति अर्थात् गमन होता है
- b. वस्तुतः पक्षियों का आकाश में उड़ना
 - i. सरीसृप जाति के जीवों का जमीन पर घिसटना
 - ii. और मनुष्य आदि का कदम उठा कर चलना भी इसी में आता है
- c. हमारा एक-एक step उठाकर चलना भी विहायोगति ही है
 - i. क्योंकि हम पृथ्वी पर जोर डालकर
 - ii. चलते तो आकाश में ही हैं

2. यह विहायोगति दो प्रकार की होती है

- a. शुभ या प्रशस्त
- b. और अशुभ या अप्रशस्त
- c. प्रशस्त गति हमको अच्छी लगती है
 - i. उनकी चाल, step उठाने का ढंग थोड़ा अच्छा लगता है
 - ii. जैसे हंस, हाथी, घोड़े, मयूर और सिंह की चाल
- d. अप्रशस्त गति हमको अच्छी नहीं लगती
 - i. जैसे ऊँट का उचक-उचक कर चलना
 - ii. या कुत्ते, सियार, लोमड़ी की चाल
- e. मनुष्यों में हमें अलग-अलग चाल दिखाई देती हैं
 - i. जिसे हम प्राणियों से compare कर प्रशस्त या अप्रशस्त कहते हैं

3. हमने जाना शरीर आदि अन्य नामकर्म की तरह ही, चलने का ढंग या विहायोगति भी हमारे करने से नहीं होती
- a. अपितु स्वभाव से होती है
 - b. हम टोकने से handwriting तो संभाल सकते हैं
 - c. पर विहायोगति change नहीं कर सकते
 - d. क्योंकि यह सीखने की चीज नहीं है
 - e. यह कर्म के उदय से है
 - f. हमें न इससे बाधित होना है और न इसको बाधा पहुँचानी है
4. थोड़ी देर के लिए हम बनावटी या stylish चाल तो चल सकते हैं
- a. जैसे फेरे लेते समय
 - b. या ramp पर चलते समय
 - c. लेकिन अपनी natural speed और style को नहीं बदल सकते
5. हमें सभी नामकर्म का परिचय अच्छे ढंग से पकड़ में आता है
- a. क्योंकि ये सब चीजें शरीर में घटित होती रहती हैं
6. **प्रत्येक शरीर नामकर्म** के उदय से एक शरीर का स्वामी एक ही जीव होता है
7. सूत्र में '**सेतराणि**' - 'स इतर' यानि इसके उलटे भी साथ में लेना, ऐसा भाव आता है
8. प्रत्येक शरीर का just opposite **साधारण शरीर** होता है
- a. इसमें एक शरीर के स्वामी अनेक जीव होते हैं
 - b. यह निगोद शरीर की स्थिति है
 - i. यहाँ एक के जन्म लेने से अनन्तों का जन्म होता है
 - ii. एक के लिए आहार होने से अनन्तों का आहार होता है
 - iii. एक की श्वास चलने से अनन्तों की श्वास चलती है
 - iv. और एक के शरीर का घात होने पर सब के शरीर का घात होता है

- c. यह सिर्फ एकेन्द्रिय वनस्पतिकायिक जीवों के एक भेद में होता है
 - d. अन्य सभी जीव प्रत्येक शरीर वाले होते हैं
 - i. अर्थात् वे अपने शरीर का आभास करते हैं
 - ii. उसमें जीते हैं
 - iii. और शरीर का घात होने पर मर जाते हैं
9. पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु में प्रत्येक शरीर वाले जीव होते हैं
- a. वनस्पतिकायिक में दोनों तरीके के जीव होते हैं
 - i. साधारण शरीर वाली **साधारण वनस्पति**
 - ii. और प्रत्येक शरीर वाली **प्रत्येक वनस्पति**
 - b. साधारण वनस्पति को अनन्तकाय, अनन्तकायिक भी कहते हैं
 - i. क्योंकि इसमें अनन्त निगोद राशि होती है
 - c. प्रत्येक वनस्पति में जीव अपने एक शरीर का स्वामी होता है
 - i. इसमें अपेक्षाकृत कम निगोद जीव राशि होती है
10. **त्रस नामकर्म** के उदय से जीव दो इन्द्रिय आदि पर्यायों को प्राप्त करता है
- a. और इनके शरीर में रक्त, मांस, चर्म आदि बनने लग जाते हैं
 - b. इसके विपरीत **स्थावर नामकर्म** के उदय से जीव एकेन्द्रिय
 - i. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति पर्याय प्राप्त करता है
 - c. इसके शरीरों में रक्त, मांस इत्यादि नहीं होता
11. त्रस नामकर्म को शुभ और स्थावर नामकर्म को अशुभ माना जाता है